एक समावेशी और सुरक्षित स्कूली संस्कृति का निर्माण

प्रणाली शर्मा

"मुझे सांस्कृतिक कार्यक्रमों, क्रियाकलापों से दूर रखा जाता था। ऐसे वक़्त मैं सिर्फ़ किनारे खड़ा होकर दर्शक बना रहता था। स्कूल के वार्षिक उत्सव में जब नाटक आदि का पूर्वाभ्यास होता था, मेरी भी इच्छा होती थी कोई भूमिका मुझे भी मिले। लेकिन हमेशा दरवाज़े के बाहर खड़ा रहना पड़ता था। दरवाज़े के बाहर खड़े रहने की इस पीड़ा को तथाकथित देवताओं के वंशज नहीं समझ सकते।"

ऊपर दिया हुआ चित्रण *जूठन* (1997) से लिया गया है, जो 1950 के दौर में एक अछूत के रूप में ओमप्रकाश वाल्मीकि के जन्म और उनके पालन-पोषण का एक आत्मकथात्मक विवरण है। यहाँ लेखक स्कूल के कार्यक्रमों से बाहर रखे जाने को लेकर अपनी भावनाएँ साझा कर रहे हैं। इन लाइनों में उनकी वह पीड़ा स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है जो उन्हें अपने बचपन में ऐसे आचरणों के कारण झेलनी पड़ती थी जो उनके जैसे बच्चों के लिए एक असुरक्षित और अप्रिय वातावरण बना देते थे। बच्चे की योग्यताओं, जाति, लिंग, भाषा, समुदाय या धर्म पर आधारित भेदभावपूर्ण स्कूली प्रथाएँ, सामाजिक और भावनात्मक कौशलों को कमज़ोर करने के साथ ही ख़राब शैक्षणिक प्रदर्शन का कारण भी बन सकती हैं। यह समझना आसान है कि शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से असुरक्षित महसूस करना, वास्तव में, किसी के सुनने, स्पष्ट रूप से सोचने और सीखने की क्षमता को किस तरह बाधित कर सकता है। हम सुरक्षित महसूस करते हैं या नहीं इसका प्रभाव हमारे भावनात्मक अनुभवों पर पड़ता है जो आगे हमारे सामाजिक अनुभवों को प्रभावित करता है।

एक समावेशी और सुरक्षित स्कूली संस्कृति

हम 'समावेशी शिक्षा' नामक शब्द से परिचित हैं, जो एक निरन्तर विकसित होने वाली अवधारणा है। प्रारम्भिक शिक्षा के सर्वव्यापकीकरण का उद्देश्य रखने वाले बड़े पैमाने के कार्यक्रमों (जैसे सर्व शिक्षा अभियान) एवं निशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई) 2009 के आने के साथ हमारे स्कूल अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चों के साथ तेज़ी से बहु-जातीय होते जा रहे हैं। इसके लिए स्कूली संस्कृतियों, नीतियों और प्रक्रियाओं की पुनर्संरचना की आवश्यकता होगी ताकि सभी विद्यार्थियों की भागीदारी को सुगम बनाया जा सके, जिनमें विकलांग बच्चे, भाषायी अल्पसंख्यक समुदायों और सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों के बच्चे यानी अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों के बच्चे और लड़कियाँ शामिल हैं (एनसीईआरटी)।

> समावेशी शिक्षा के एक संकीर्ण और मशीनी दृष्टिकोण से हटकर हमें उसके ऐसे दृष्टिकोण की ओर बढ़ना आवश्यक है जो विकलांग बच्चों के समावेशन भर से परे जाकर देशभर में बहिष्करण के व्यापक पहलुओं को ध्यान में रखता हो। समावेशी स्कूल व्यक्तिगत असमानताओं को ऐसी समस्याओं के रूप में नहीं देखते हैं जिन्हें हल करने की ज़रूरत है बल्कि उन्हें सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को समृद्ध करने के अवसरों के रूप में देखते हैं। समावेशी शिक्षा के पीछे का विचार समरूपता पर सवाल उठाना, उसे चुनौती देना एवं सांस्कृतिक रूप से बहुलवादी समुदायों को शामिल करना होना चाहिए। इन नीतियों और अधिनियमों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए, स्कूली संस्कृति का सुरक्षित और समावेशी होना बहुत ज़रूरी है।

स्कूलों में सुरक्षा का अर्थ होगा एक बच्चे के लिए ऐसा सुरक्षित वातावरण बनाना जिसकी वह अपेक्षा करता है; एक ऐसा वातावरण जो सीखने में सहयोग देता है। स्कूल के सुरक्षा से जुड़े प्रयास उन सभी जोखिमों को ध्यान में रखेंगे जो बच्चों की ख़ुशहाली को प्रभावित कर सकते हैं। इसमें अपमान, हिंसा, दुर्घटनाओं, सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं आदि से सुरक्षा शामिल होगी। यह आवश्यक है कि स्कूल अपने परिसर के भीतर किसी भी तरह की सज़ा, दादागिरी, उत्पीड़न, धमकी या अपमानजनक भाषा के उपयोग के बग़ैर एक सकारात्मक वातावरण प्रदान करे। जब बच्चे ख़तरा महसूस करते हैं, तो हो सकता है वे सीखने पर ध्यान केन्द्रित न कर पाएँ या वे पूरी तरह से स्कूल जाना बन्द भी कर सकते हैं।

सामाजिक और भावनात्मक रूप से सुरक्षित स्कूल बनाना

इस तरह के वातावरण का निर्माण करने के लिए स्कूल के भीतर के बुनियादी ढाँचे, स्वास्थ्य व स्वच्छता व्यवस्थाओं

और मनो-सामाजिक गतिशीलता पर निरन्तर और व्यापक रूप से ध्यान देने की आवश्यकता होती है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा और निश्चितता को अत्यावश्यक मानते हुए उन पर ध्यान केन्द्रित करना है। स्कूल अधिकारियों के पास शिक्षकों और स्कूल के कर्मचारियों के आचरण, उनके पेशेवर प्रशिक्षण और कक्षा में प्रभावी प्रबन्धन से जुड़ी स्पष्ट प्रक्रियाएँ होनी चाहिए। स्कूल में सामाजिक और भावनात्मक रूप से सुरक्षित वातावरण को बढ़ावा देने से बच्चों में सीखने, दोस्तियाँ बनाने और स्वस्थ जीवन जीने की क्षमता बढ़ती है।

हम अक्सर देखते हैं कि एक सुरक्षित स्कूल की योजना मुख्य रूप से भौतिक सुरक्षा पर केन्द्रित होती है, जैसे कि बुनियादी संरचना, संसाधनों तक पहुँच आदि। वास्तव में एक प्रभावी, व्यापक योजना बनाने के लिए पूरी स्कूली व्यवस्था में ऐसी प्रक्रियाओं की आवश्यकता होगी जहाँ शिक्षक, विद्यार्थी, स्कूल कर्मचारी और माता-पिता इस बात पर एक साथ काम करें और जानें कि वे कितना सुरक्षित महसूस करते हैं और आपसी सहयोग से यह विचार करें कि वे स्कूल को कैसा बनाना चाहते हैं और एक सकारात्मक व्यवहार प्रणाली व ऐसी विषयवस्तु तैयार करें जो भाषा और विचार को आकार देती हैं (डिवाइन एंड कोहेन, 2007)।

एक स्कूल को सुरक्षित और समावेशी बनाने के पीछे कई तरह के घटक काम करते हैं — समाज, परिवार और समुदाय। आपस में जुड़े इन घटकों के अलावा, एक बेहद महत्त्वपूर्ण घटक स्कूल का वातावरण है, जिसमें नियम, अप्रत्यक्ष मानदण्ड, विद्यार्थियों और वयस्कों के बीच के सम्बन्ध आदि शामिल होते हैं और यह वातावरण एक बच्चे के सभी क्षेत्रों में स्वस्थ विकास को प्रभावित करता है। ऐसे तीन परस्परव्यापी हस्तक्षेप हो सकते हैं जो शिक्षकों व स्कूल प्रशासकों को एक सुरक्षित और समावेशी स्कूल बनाने में सक्षम बना सकते हैं।

1. एक व्यापक स्कूली योजना बनाना

हम स्कूल या कॉलेज में कितनी बार 'जीरो टॉलरेंस' शब्द सुनते हैं? क्या आपने देखा है कि इसे एक सकारात्मक नीति के रूप में कैसे प्रचारित किया जा रहा है? जीरो टॉलरेंस स्कूलों में विद्यार्थियों द्वारा होने वाले दुर्व्यवहारों का जवाब है, जिसका अर्थ है कि स्कूल किसी भी प्रकार के दुर्व्यवहार के लिए विद्यार्थियों को कड़ी सज़ा देगा। आमतौर पर, बात स्कूल से निष्कासन पर आ जाती है। जब दुर्व्यवहार को लेकर ऐसी प्रतिक्रिया स्कूल की नीति बन जाती है, तो स्कूल के कर्मचारी,

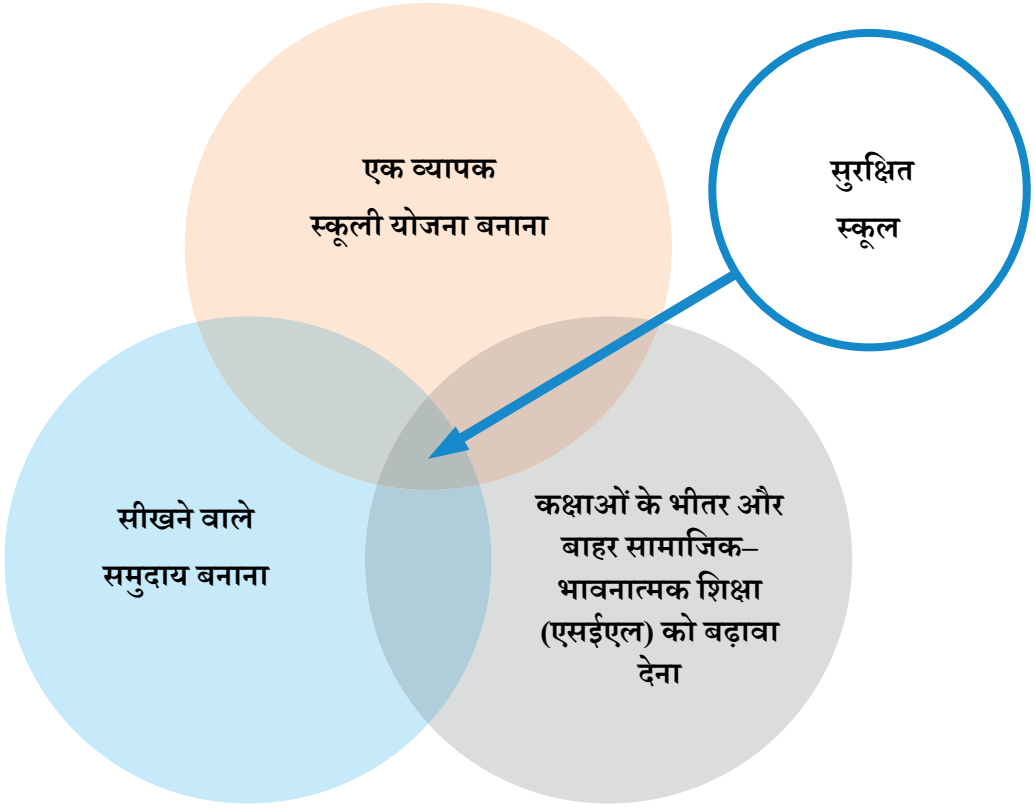

चित्र-1 : एक समावेशी और सुरक्षित स्कूल की रूपरेखा।

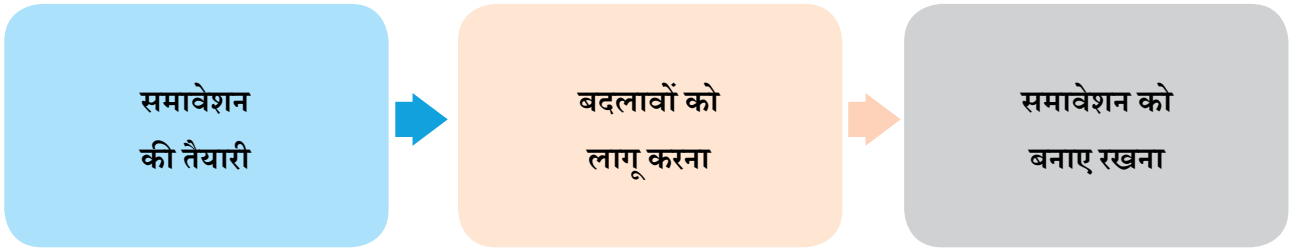

चित्र-2 : स्कूलों को समावेशी बनाने की ओर बढ़ाए जाने वाले क़दम।

शिक्षक, प्रधानाचार्य या माता-पिता भी इसका पालन करने और कोई सवाल न उठाने की ज़रूरत महसूस करने लगते हैं। जीरो टॉलरेंस की नीति के पीछे धारणा यह है कि स्कूल से अशान्ति फैलाने वाले विद्यार्थियों को निकालने से स्कूल दूसरों के लिए सुरक्षित स्थान बन जाएगा। लेकिन क्या यह नीति वास्तव में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करती है? ये स्कूल न केवल ख़ुद को सुरक्षित बनाने में असफल होते हैं बल्कि विद्यार्थियों के स्कूल छोड़ने की घटनाओं और समस्याग्रस्त व्यवहार को भी बढ़ावा भी देते हैं (फार्बरमैन, 2006)। हमें एक ऐसी व्यवस्था पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है जो स्कूल के कर्मचारियों और माता-पिता से लेकर समुदाय तक को मौक़े देती हो कि वे चिन्ताजनक क्षेत्रों की पहचान करें, संसाधनों और कौशलों की खोज करें, सकारात्मक बदलाव की योजना बनाएँ और फिर प्रगति का मूल्यांकन करें।

स्कूल की उन सभी प्रक्रियाओं पर ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है जो भेदभाव को जन्म दे सकती हैं, जैसे कि मध्याह्न भोजन के दौरान कामों का विभाजन, खेलों के दौरान टीमों का चयन या फिर बैठने की व्यवस्था। इन मुद्दों से निपटने के लिए माता-पिता और समुदाय के लोगों के साथ मिलकर कई क़दम उठाए जा सकते हैं।

(क) समावेशन की तैयारी

स्कूल के सभी सदस्यों से सहयोग प्राप्त करने के लिए अत्यावश्यकता को निर्धारित करना ज़रूरी है। हम अक्सर देखते हैं कि राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण[1] या बड़े पैमाने पर हुए किसी भी अध्ययन के आँकड़े विद्यार्थियों के सीखने में आए अन्तरालों या नुक़सानों के सम्बन्ध में उचित निर्णय लेने में वरिष्ठ अधिकारियों की मदद करते हैं। इसी तरह, विद्यार्थी कैसे और क्यों पढ़ाई छोड़ रहे हैं, विद्यार्थियों की भावनात्मक दशा, शिक्षकों के साथ उनके सम्बन्ध आदि के आँकड़े एकत्रित कर उन्हें सामने रखकर अत्यावश्यकता को निर्धारित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में सभी प्रासंगिक हितधारकों के साथ एक टीम बनाई जा सकती है। टीम में ऐसे लोगों को शामिल किया जाना चाहिए जो समावेशन के बारे में साझा दृष्टिकोण रखते हों, जिनके पास निर्णय लेने और उन्हें लागू करने का अधिकार हो, जिन्हें इस क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त हो और जिन्होंने स्कूल में नेतृत्व का प्रदर्शन किया है।

(ख) बदलावों को लागू करना

क्रियान्वयन की दिशा में पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण क़दम है योजना के दृष्टिकोण को व्यक्त करना। एक बेसलाइन अध्ययन की शुरुआत स्कूल के प्रधानाचार्य द्वारा प्रदत्त एक स्व-मूल्यांकन उपकरण के साथ की जा सकती है जिसके द्वारा समावेशिता के वर्तमान स्तर, सुधार की गुंजाइश, परिवर्तन में आने वाली रुकावटों को समझा जा सकता है और निष्कर्षों का उपयोग एक कार्य योजना बनाने के लिए किया जा सकता है। योजना में परिमेय उद्देश्य, इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कार्य, आँकड़ों को इकट्ठा करने के लिए उपकरण एवं विधियाँ, प्रत्येक उद्देश्य के विकास की जाँच और प्रत्येक उद्देश्य की देखरेख के लिए एक ज़िम्मेदार व्यक्ति शामिल होना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि लक्ष्य सहयोगपूर्ण शिक्षण और नियोजन को सुनिश्चित करना है तो उद्देश्य ये हो सकते हैं : विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रतिपादन के विभिन्न मॉडलों का उपयोग करना और विभिन्न तरह के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण की रणनीतियों से सम्बन्धित पेशेवर विकास के अवसरों का लाभ लेना। छोटी अवधि की उपलब्धियाँ व्यक्तियों को एक लक्ष्य की ओर उत्साह के साथ काम करने के लिए प्रेरित कर सकती हैं और बड़ी सफलता की सीढ़ियाँ बन सकती हैं।

(ग) समावेशन को बनाए रखना

समावेशन को बनाए रखने के लिए एक महत्त्वपूर्ण क़दम, किए गए कार्य पर विचार करना और इस बात की पहचान करना है कि क्या काम करता है और क्या नहीं। इस जानकारी का उपयोग सुधार करने के लिए किया जा सकता है। समय के साथ, टीम की पेशेवर क्षमता सेमिनारों, कार्यशालाओं, साझाकरण और अध्ययन के माध्यम से विस्तारित होने लगती है। प्रत्येक शिक्षक और स्कूल के अन्य कर्मचारियों की पेशे-सम्बन्धी आवश्यकताओं को समझने से पेशेवर विकास से जुड़ी प्रभावी गतिविधियों के आयोजन में मदद मिल सकती है। परिवर्तनों के दस्तावेज़ीकरण से स्कूल की कार्यविधियों

और प्रक्रियाओं को मार्गदर्शन मिल सकता है। एक स्कूल में समावेशन जारी रखने के लिए प्रशासनिक भागीदारी और समर्थन उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितनी महत्त्वपूर्ण एक कक्षा के अन्दर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया होती है।

2. कक्षा के भीतर और बाहर सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा को बढ़ावा देना

हम जानते हैं कि सीखना केवल कक्षा के औपचारिक माहौल में ही नहीं होता है; यह खेल के मैदानों में, मध्याह्न भोजन और सुबह की सभाओं के दौरान, गलियारों में, पुस्तकालय आदि में भी होता है। इसको ज़बरदस्ती स्कूल के पाठ्यक्रम में समेटा नहीं जा सकता।

इस बात की समझ कि विद्यार्थियों में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (एसईएल) के विकास में स्कूलों की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण होती है, संरचनात्मक और व्यक्तिगत, दोनों ही स्तरों पर होनी चाहिए। कुछ लोगों का मानना है कि एसईएल विषय-क्षेत्रों के दायरे में रची-बसी होती है और इसे पाठ्यक्रम के आदान-प्रदान के दौरान सिखाया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि अलग से किसी कार्यक्रम की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सभी ज़रूरी कौशलों को रोज़ के अनुभवों, नियमित संवादों और सम्बन्धों के माध्यम से सीधे-सीधे सीखा जा सकता है। लेकिन मौजूदा स्कूल पाठ्यक्रम के अन्तर्गत भी ऐसी शिक्षा के प्रभावी होने के लिए एक सहायक वातावरण प्रदान करना ज़रूरी है। सामाजिक और भावनात्मक रूप से सहायक वातावरण के बग़ैर स्कूल का पाठ्यक्रम अधूरा है और इसका बच्चों के विकास पर कोई महत्त्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ सकता।

मेरे अनुभव में, एसईएल की वे कक्षाएँ जो विशेष रूप से ली जाती हैं उतनी प्रभावी नहीं होतीं जितना उसके प्रति रोज़मर्रा के शिक्षण की प्रक्रिया में अपनाया जाने वाला समेकित दृष्टिकोण प्रभावी होता है। एक शिक्षक जो बच्चों को ख़ुद को अभिव्यक्त करने, अपने अनुभवों को साझा करने और कक्षा के निर्णयों में भाग लेने के अवसर देता है, वह न केवल उन्हें सीखने के निर्धारित परिणामों को प्राप्त करने में मदद करता है बल्कि उनके भीतर कई सामाजिक-भावनात्मक कौशलों को विकसित करता है जैसे एक साथ मिलकर कार्य करना, नैतिक निर्णय लेना, समस्या का समाधान करना आदि। शिक्षक विद्यार्थियों के जोड़ों से इस सवाल का जवाब माँग सकता है : 'आप कैसे चाहेंगे कि मैं यह सुनिश्चित करूँ कि मैं आपके सवालों को सुनूँ?' इस पर चर्चा करते हुए विद्यार्थी यह भी चर्चा करते हैं कि कौन-सा तरीक़ा उचित होगा और किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाएगा। शिक्षक और विद्यार्थी आपस में मिलकर एक विधि को लेकर निर्णय ले सकते हैं और उसका पालन कर सकते हैं। एक अन्य शिक्षक कक्षा में आता है और विद्यार्थियों को कक्षा के अन्दर पालन किए जाने वाले शिष्टाचारों की याद दिलाता है। दोनों ही आचरण अपेक्षित व्यवहारों को सामने रखते हैं, लेकिन पहले शिक्षक ने विद्यार्थियों की भावनाओं की परवाह करते हुए और उन्हें कक्षा को लेकर नियम निर्धारित करने का अवसर देकर उनके प्रति सम्मान व्यक्त किया। यह तरीक़ा उस पारम्परिक तरीक़े से अधिक प्रभावी है जिसमें बच्चों के सामने कक्षा के नियमों की घोषणा की जाती है और उन्हें उन नियमों का पालन करने की याद दिलाई जाती है जबकि इन नियमों को बनाने में उनकी कोई राय नहीं होती। हो सकता है दोनों ही समूह एक जैसी प्रक्रियाओं का पालन करें लेकिन पहला समूह विद्यार्थियों को ज़िम्मेदारी की भावना विकसित करने में मदद करता है।

एक सुरक्षित और समावेशी कक्षा के विकास से विद्यार्थियों को भी यह मदद मिलती है कि वे सज़ा या अपमान के डर के बिना जोखिम ले सकते हैं या ग़लतियाँ कर सकते हैं। कक्षाओं के दौरान जब शिक्षक अपने ख़ुद के कमज़ोर पक्ष दिखाते हैं या व्यक्तिगत कहानी या व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से अपनी भावनाएँ साझा करते हैं तो यह शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच के सम्बन्ध को गहरा करता है जो सकारात्मक सामाजिक-भावनात्मक कौशल विकसित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है। छोटे बच्चे विशेष रूप से अपने शिक्षक के बचपन की कहानियाँ सुनने में अधिक रुचि रखते हैं।

समुदाय की भावना पैदा करने के लिए सर्कल टाइम शिक्षण का एक बहुत प्रभावी तरीक़ा हो सकता है। यह गतिविधि विद्यार्थियों को दिन के लिए तैयार होने और सीखने का मौक़ा देती है। ऐसी परिस्थितियों में जहाँ बच्चों को घर पर अपने मसलों या विचारों को व्यक्त करने के लिए जगह नहीं मिलती, वे स्कूल के माहौल में ख़ुद को शामिल महसूस कर सकते हैं। जानकारियों को कक्षा से बाहर न ले जाने और एक-दूसरे का सम्मान करने के एक नियम (जो विद्यार्थियों के सहयोग से तय किया गया हो) का पालन करना बहुत आवश्यक है।

3. सीखने वाले समुदाय बनाना

सीखने वाले समुदायों में व्यक्तियों के वे समूह शामिल होते हैं जो एक जगह आकर अपने काम, सीख, विचारों और सुझावों को नियमित रूप से साझा करते हैं। सफल प्रक्रियाओं को साझा करने के लिए एक मंच बनाना, समस्याओं की पहचान करने और उनका हल निकालकर मौजूदा कार्यविधियों में एसईएल की प्रक्रियाओं को शामिल करने में प्रभावी होता है। सीखने वाले समुदाय बनाने के कुछ तरीक़े निम्नलिखित हैं :

- चर्चाओं की मण्डलियाँ जहाँ एसईएल के विशिष्ट विषयों पर सभी शिक्षकों और स्कूल प्रशासकों के मत शामिल होते हैं जैसे कि विद्यार्थी और शिक्षक के सम्बन्धों को कैसे सुधारें। इसमें केन्द्रित समूह चर्चाओं के नियमों का पालन हो सकता है।
- अध्ययन समूह जिनमें शिक्षक एसईएल से सम्बन्धित पाठ, सामग्री और शोध को पढ़ते हैं और उन पर चर्चा करते हैं।
- क्रियात्मक शोध समूह जो एसईएल से सम्बन्धित गतिविधियों के प्रभावों पर विचार करते हैं। ये ज़मीनी स्तर पर किए गए कार्य के प्रभाव पर भी शोध कर सकते हैं और उन विचारों के आधार पर क़दम उठा सकते हैं।
- एसईएल की शिक्षण पद्धतियों पर ऑनलाइन संचार के साधनों का उपयोग, जैसे व्हाट्सएप, संवाद मंच, कॉन्फ्रेंस कॉल, वीडियो कॉल।
- शिक्षकों के लेखों से सजी शिक्षा पत्रिका प्रकाशित की जा सकती है और उसे शिक्षक समुदाय के बीच वितरित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

विद्यार्थियों के शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करने के अनुभव को बढ़ावा देना उनके सीखने को समृद्ध करता है और उनके स्वस्थ विकास में मदद करता है। इस लक्ष्य को मज़बूती देने के लिए कई चरणों का पालन करना ज़रूरी है। व्यवस्थित हस्तक्षेप और प्रक्रियाएँ सुरक्षित स्कूलों की नींव तैयार करते हैं। सुरक्षित महसूस करने से जुड़े सामाजिक और भावनात्मक आयाम एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं; धमकाए जाने जैसे सामाजिक अनुभव फिर से डराए-धमकाए जाने का डर पैदा करते हैं और यह तनाव में बदल जाता है।

भौतिक बुनियादी ढाँचे भी यह सूक्ष्म सन्देश दे सकते हैं कि बच्चों से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा है। उदाहरण के लिए, स्कूल में मेटल डिटेक्टरों को कई कारणों से एक आवश्यक उपकरण के रूप में देखा जा सकता है। लेकिन वे यह सन्देश भी दे सकते हैं कि हिंसा एक आम बात है और यह कभी भी हो सकती है या जेंडर के आधार पर बैठने की व्यवस्था यह सन्देश दे सकती है कि लड़के और लड़कियाँ अलग हैं और उन्हें आपस में घुलना-मिलना नहीं चाहिए। एक विद्यार्थी स्कूल में सुरक्षित महसूस करे, इसके लिए सबसे ज़रूरी बात है कि उनके पास स्कूल से पहले, उसके दौरान या उसके बाद जाने के लिए एक जगह हो। उस स्थान का हमेशा एक भौतिक स्थान होना ज़रूरी नहीं है बल्कि वह स्थान एक भरोसेमन्द व्यक्ति भी हो सकता है।

किसी भी शिक्षक के लिए विद्यार्थियों की ख़ातिर एक अलग एसईएल पाठ्यक्रम या कार्यक्रम बनाना व्यावहारिक नहीं है। इसे स्कूली जीवन के शैक्षणिक और ग़ैर-शैक्षणिक क्षेत्रों में आसानी से समाहित किया जा सकता है। सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं तथा खेल, रिसेस और असेम्बली जैसी अन्य स्कूली प्रक्रियाओं में एसईएल को कैसे समाहित किया जाए, इस पर और जानकारी प्राप्त करने के लिए ऐसे विभिन्न ऑनलाइन संसाधन मौजूद हैं जिन्हें कक्षा के भीतर उपयोग में लाया जा सकता है।

Endnotes

i National Achievement Survey (NAS) is a large-scale survey of students' learning undertaken by the Ministry of Education, Government of India.

References

Central Board of Secondary Education. (2012). *Value Education: A Handbook for Teachers*. New Delhi: CBSE

Devine, J., & Cohen, J. (2007). *Making Your School Safe: Strategies to Protect Children and Promote Learning*. New York: Teachers College Press

Farberman, R. (2006, October). *Zero Tolerance Policies can have Unintended Effects, APA report finds*. Retrieved from the American Psychological Association: https://www.apa.org/monitor/oct06/tolerance

NCERT. (n.d.). *Index for Inclusive Schools*. New Delhi: NCERT

प्रणाली शर्मा अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में स्कूल ऑफ़ कंटिन्यूइंग एजुकेशन में शिक्षक के रूप में काम करती हैं। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से मानव विकास एवं बाल्यावस्था अध्ययन में पीएचडी की है। शोध में उनकी रुचियाँ सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा और बाल विकास के क्षेत्रों में हैं। उनके काम में, विद्यार्थियों और शिक्षकों हेतु सामाजिक-भावनात्मक एवं मूल्यांकन की रूपरेखाओं के मॉड्यूलों पर विभिन्न राज्यों के लिए पूर्वस्कूली पाठ्यक्रम तैयार करना शामिल है। उनसे *pranalee.sharma@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : पल्लवी प्रतिभा **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय